CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

सगुण निर्गुण तत्त्व विवेक

— श्री वैदेहीकान्त शरण

ब्रह्म के सम्बन्ध में जितने भी प्रश्न हैं उनमें सगुण निर्गुण का प्रश्न सबसे प्रमुख है । इसीलिए श्री रामचरितमानस में पार्वती सर्वप्रथम इसी विषय का प्रश्न पूछती हैं – "प्रथम सों कारण कहहु विचारी । निर्गुण ब्रह्म सगुण वपु धारी ॥" और शंकर जी सगुण विरोधियों की ओर संकेत करते हुए कहते हैं "अज्ञ अकोविद अंध अभागी । कोई विषय मुकुर मन लागी । लंपट कपटी कुटिल विशेषी । सपनेहु संत सभा नहि देखी । कहहि ते वेद असंभव बानी । जिनके सूझ लाभु नहिं हानी । मुकुर मलिन और नयन विहीना । राम रुप देखहिं किमि दीना ॥ जिन्ह के अगुण व सगुण विवेका । जल्पहि कल्पित वचन अनेका । हरिमाया वश जगतभ्रमाहीं । तिन्हहिं कहत कछु अघटित नाहीं ॥ पुनः सगुण निर्गुण के सम्बन्ध में सिद्धान्त मत देते हुए कहते हैं– "अगुणहि सगुणहि नहि कछु भेदा । गावहि मुनि पुराण बुध वेदा । अगुण अरुप अलख अज जोई । भगत प्रेमवश सगुण सो होई । जोगुण रहित सगुण सोई कैसे । जलु हिम उपल विलग नहिं जैसे ॥ राम सच्चिदानंद दिनेशा । नहिं तहँ मोह निशा लवलेशा ॥" पुनः उपसंहार रूप में उत्तरकांड में कहते हैं– "निर्गुण रूप सुलभ अति, सगुण जान नहिं कोई । सुगम अगम नाना चरित, सुनि मुनि मन भ्रम होई ॥"

अतः निर्गुण सगुण विवेक होना आवश्यक विषय वस्तु है । निर्गुण सगुण का तात्त्विक (प्रमाणोपपन्नं स्वरूपं तत्त्वं- पदपंचिका) विवेक के लिए सर्वप्रथम सगुण निर्गुण पदों का अर्थ समझ लेना अत्यावश्यक है । इस क्रम में सर्वप्रथम गुण का अर्थ गुण की परिभाषा और तब सगुण निर्गुण का ज्ञान प्राप्त करना चाहिए ।

गुण शब्द का अर्थ धनुष की डोरी, द्रव्याश्रित २४ गुण (रूप रस गन्ध स्पर्श संख्या परिमाण पृथक्त्व संयोग विभाग परत्वापरत्व गुरुत्व द्रवत्व स्नेह शब्द बुद्धि सुखदुःखेच्छाद्वेष प्रयत्न धर्माधर्म संस्काराश्चतुर्विंशतिर्गुणाः - त० सं०) सत्त्व रज तम (सांख्य) तीन गुण साहित्य के १० गुण (श्लेषः प्रसादः समता समाधिः माधुर्यमोजः पद सौकुमार्यम् । अर्थस्य च व्यक्तिरुदारता च कान्तिश्च काव्यस्य गुणादशैते । भरत) औदार्यादि (मनोवैज्ञानिक) गुण इन्द्रियवाचक आदि होता है – "मौर्व्यां द्रव्याश्रिते रुत्व शौर्य सन्ध्यादिकैर्गुणः अ० को ३।३।४७ " "गुणो मौर्व्यामप्रधाने रूपादौ सूद इन्द्रिये । त्याग शौर्यादि सत्त्वादि सन्ध्याद्यावृत्तिरज्जुषु । मे० ।' व्याकरण में अ० ए० ओ को गुण कहा गया है– "अदेङ् गुणः पा० १।१।४५ पुनः अ इ मिलकर ए, अ ऊ मिलकर ओ आदि बन जाने के सन्धि को भी गुण संज्ञा हैं – आद् गुणः पा० ६।१।७७ गुण की परिभाषा के सम्बन्ध में 'गुण आमन्त्रणे गुणयति (चुरा०) धातु पाठ ही लक्षण कहा जायेगा । परन्तु न्याय वैशेषिक के अनुसार "द्रव्य कर्म भिन्नत्वे सति सामान्यवत्त्वम् " संक्षेप में द्रव्याश्रितत्त्व लक्षण है । इनके अनुसार परमात्मा के आठ गुण हैं । संख्या, परिमाण, पृथक्त्व, संयोग, विभाग, ज्ञान, ईच्छा, कृति (प्रयत्न) और जीवात्मा में उसके अतिरिक्त सुख, दुःख, द्वेष, धर्माधर्म, संस्कार ये छः गुण और हैं । जो परमात्मा में नहीं हैं । व्याकरण का गुण 'अ' अक्षराणामकारोऽस्मि–गीता' एवं 'अकारो वासुदेवः स्यात् (एका० को०) के अनुसार परमात्मा में है ।

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

गुण के सम्बन्ध में साहित्य का लक्षण भावात्मक (सगुणत्व) ही नहीं अपितु अभावात्मक (दोषराहित्य) भी है- "महान् निर्दोषता गुणः ।' इस प्रकार साहित्य के अनुसार ब्रह्म का गुण होना (सगुणत्व) ही नहीं है अपितु ब्रह्म का निर्दोष (दुष्ट गुण रहित) होना भी गुण है। अतः हेय गुण साहित्य (निर्गुणत्व) भी गुण (सगुणत्व) है।

निर्गुण शब्द में दो पद हैं निर्+गुण। निर् का अर्थ निश्चय और निषेध दोनों होता है– "निर्निश्चयनिषेधयोः अ० को० ३।३।२५३ ॥ अतः निर्गुण पद का अर्थ निश्चित (नित्य) गुण वाला भी है। अचिन्त्यभेदाभेदवादी निम्बार्क दर्शन निर्गुण का लक्षण गुणातीतो निर्गुणः कहते हैं। कुछ लोग "निर्गुतोगुणः निर्गुणः" कहते हैं। तो कुछ लोक अविकृतो गुणः निर्गुणः कहते हैं कुछ लोग निखिल– हेयप्रयत्नी को गुणो निर्गुणः कहते हैं। कुछ लोग अगमो– गुणः निर्गुणः कहते हैं जो सभी निर्गुण के पद निर्निश्चय अर्थ के अनुसार सम्पुष्ट है।

सगुण पद में भी दो पद है स+गुण। 'अव्ययं विभक्तिसमीपसमृद्धिव्यृद्ध्यर्थाभावात्ययासंप्रतिशब्दप्रादुर्भाव पश्चाद्ययानुपूर्व्ययौगपद्य सादृश्य सम्पतिसाकल्यान्तवचनेषु- पा० २।१।३ के अनुसार १ यौगपद्य (सगुणः = गुणेन युगपत्) २ सादृश्च (सगुणः = गुणस्य सदृशः) ३ सम्पत्ति (सगुणः = गुणानां सम्पत्तिः) ४ साकल्य (सगुणः= गुणमपि अपरित्यज्य) ५ अन्त (सगुणः= गुणपर्यन्तम्) ये अर्थ होते हैं। ब्रह्म के सम्बन्ध में शंकराचार्य जी स्वीकार करते हैं कि ब्रह्म के विषय में सविशेष (सगुण) और निर्विशेष (निर्गुण) दोनों प्रकार की श्रुतियां हैं "सन्ति उभयलिङ्गाः श्रुतियो ब्रह्मविषयाः । सर्वकर्मा सर्वकामः सर्वगन्धः सर्वरस इत्येवमाद्याः सविशेषलिङ्गाः, अस्थूलमनणु अह्रस्वम् अदीर्घम् इत्येवमाद्यश्च निर्विशेषलिङ्गाः।

श्रुति में ब्रह्म का निर्विशेष और सविशेष दोनों रूपों का प्रतिपादन तो है– यत्तददेश्यम् ग्राह्यमगोत्रमवणरचक्षुः श्रोत्रं तदपाणिपादम्। नित्यं विभुं सर्वगतं सुसूक्ष्मं तदव्ययं यद्भूतयोनिं परिपश्यन्ति धीराः। मु० १।१।६ ॥ परन्तु श्रुति ने निर्विशेष वाचक प्रथम वाक्य (यत्तददेश्यम्०) को नपुंसकलिंग में एवं सविशेष वाचक द्वितीय वाक्य (नित्यं विभुं०) को पुलिंग में प्रतिपादित कर यह अति स्पष्ट कर दिया है कि ब्रह्म का अचित् शरीर ही निर्विशेष है और सच्चिदानन्द परमेश्वर सविशेष हैं क्योंकि निर्विशेष नपुंसक लिंग और सविशेष पुलिंग में निरुपित है। इस प्रकार ब्रह्म का शरीर (सपर्य्यगात् शुक्रम् अकायम् अव्रणम् अस्नाविरम् शुद्धम् पापविद्धम्) नपुंसक लिंग में तथा ब्रह्म का रूप (कविर्मनीषी परिभूः स्वयंम्भूः यथा तथ्यतोऽर्थान् व्यदधात् शाश्वतीभ्यः समाभ्यः। शु० य० ४० । ८ ॥) पुल्लिंग में निरुपित किया है।

यहाँ पर यह भी स्पष्ट कर देना आवश्यक है कि आचार्य जी के अनुसार ब्रह्म का गुण सामान्य गुण नहीं है वह प्राकृतिक (भौतिक) गुणों से सर्वथा विलक्षण है। ज० गु० रामानन्दाचार्यजी ने "निर्गता निकृष्टाः सत्त्वादयः प्राकृतागुणाः यस्मात्तन्निर्गुणमिति व्युत्पत्तेर्निकृष्टगुणराहित्यमेव निर्गुणत्वम्। तथैव च सत्त्वादयो न सन्तीशे यत्र च प्राकृतागुणाः। सशुद्धः सर्वशुद्धेभ्यः पुमानाद्यः प्रसीदतु ॥ योऽसौ निर्गुणः प्रोक्तः शास्त्रेषु जगदीश्वरः। प्राकृतैर्हेयसत्वाद्यैर्गुणैहीनत्वमुच्यते ॥ वि० पु० । इत्यादौ प्रतिपादित्वात्प्राकृतसत्वादिगुणनिषिद्धे सति ब्रह्मणोदिव्यगुणाभयत्वसिद्धेः। तादृशदिव्यगुणानान्च "परास्य शक्तिर्विधैव श्रूयते स्वाभाविकीज्ञानवलक्रिया च (श्वे० ६१८) इत्यादौ स्वभाविकत्वाभिधानात्प्राकृतहेयगुणरहितत्वेन निर्गुणत्वं दिव्यगुणवत्वेन च सगुणत्वमित्युभयथैकस्यैव ब्रह्मणोनिर्देश इति न किन्चिदनुपपन्नम् (आनन्दभाष्य १।२) इत्यादि रूप से निरुपित किया है। तथैव इसे अद्भुत गुण और दिव्यगुण कहा है। अद्भुत पद से विलक्षणत्व एवं दिव्य पद से नित्यत्व और अलौकिकत्व निरुपित किया है – "श्रीमन्तं श्रुतिवेद्यमद्भुतगुणग्रामान्यरत्नाकरम् श्री वै० म० भा० श्लोक- १।१ चित्रं चाखिलमदभुतं शुभगुणा श्लो० १।२ श्रीमान् दिव्यगुणाब्धिरौपनिषदोहेतुः शरण्यः प्रभुः श्री

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

रामानुजाचार्यजी ने निखिलहेयप्रयत्नीककल्याणैकतानः स्वेतरसमस्तवस्तुविलक्षणानन्तज्ञानानन्दैकस्वरूपः, स्वभाविकानवधिकाशय ज्ञान बलैश्वर्य शक्ति तेजः प्रभृत्यसंख्येय कल्याण गुणमहोदधि कहा है जिसमें उनके गुण में १ अखिलहेयप्रयत्नीकत्व २स्वेतर विलक्षणत्व ३ स्वाभाविकत्व ४ कल्याणत्व ये ४ विशेषण हैं वा लक्षण हैं। श्री शंकराचार्यजी ने इसे सदसद्विलक्षण अनिवर्चनीय कहा है। श्री निम्बार्काचार्य के मत में इसे अचिन्त्य (१. अपरिमितमहिमत्वादचिन्त्यत्वम् २. अचिन्त्यं तर्कासह यज्बानँ ३. दुर्घटघटत्वं ह्यचिन्त्यत्वम् कहा है और वल्लभाचार्य ने इसे अविकृत (अविकृतपरिणामीत्वं अविकृत्वम्) कहा है। ये सभी विपर्यय बोधक पद विलक्षण अनिर्वचनीय, अचिन्त्य, अविकृत, विपर्यय बोधक निर्गुण पद के प्रकार के प्रकाशक हैं। साधारणतया विपर्यय के तीन अर्थ होते हैं – १. अभाव २. अन्यथाभाव ३. वैपरीत्य यहाँ अन्तिम दोनो में ही तात्पर्य संभव होने से यहाँ निर्गुण पद से अन्यथा गुण अथवा विपरीत (लौकिक गुण विरुद्ध) गुण सिद्ध होता है।

शास्त्रो में ब्रह्म के गुण के सम्बन्ध में कहा गया है– "जगतः कारणत्वं च सगुणत्वं स्वभावतः त्रिपाद्विभूतियुक्तत्वं ब्रह्मणों रूपमुच्यते ॥ "प्राप्यं सर्व गुणार्णवो निखिलभृत्, रक्षैक दीक्षो महान् नित्यश्चेतन ईश्वरः सकरुणः सर्वज्ञता भूमिराट्। औदार्यादिगुणावलिश्रितऋतं सत्यं च सर्वाश्रयः, श्रीरामो हि परात्परः सुगतिभिः सेव्यः सदा सर्वगः ॥"

भगवान् के गुणों का निरुपण ज०ग० श्री मथुराचार्य कृत भगवद् गुण दर्पण में किया गया है। यहाँ भगवान् का गुण लेख का विषय नहीं है, प्रत्युत निर्गुण सगुण तत्त्व की विवेचना लेख का विषय है। अतः भगवद् गुणो की चर्चा छोड़ निर्गुण सगुण की विवेचना करता हूं। निर्गुण पद गुणों का अत्यन्ताभाव शास्त्रों को इष्ट नहीं है। क्योंकि सर्वत्र निर्गुणपद के साथ ही सगुण पद का भी प्रयोग होता है। अतः निर्गणपद का अर्थ नित्यगुण मानने पर ही निर्गुण सगुण में अन्वय और सामंजस्य स्थापित हो सकता है। अन्यथा नहीं किंच निर्गुण का अर्थ अत्यन्त गुणाभाव मानने पर ब्रह्म की सत्ता ही स्थापित हो जाएगी। गुण रहित कोई भी वस्तु नहीं है। गौतम ने कहा है "व्यत्तयाकृति जातयस्तु पदार्थाः– न्या० सू० २।२।६६।" निर्गुण मानने पर निरालम्ब की उपासना भी सम्भव नहीं है – "रूपरेख गुन जाति जुगुति विनु, निरालम्ब मन चकृत धावे। सब विधि अगम विचारहि तातें 'सूर' सगुण लीला पद गावै।

गुण के अत्यन्ताभाव के अर्थ में निर्गुण की कहीं सत्ता नहीं है। अतः गोपियाँ उद्धव से प्रश्न कर निरुत्तर कर देती है – "निर्गुण कौन देश के वासी ? मधुकर, हँसि समुझाय सौह, बुझति सांच न हांसी। को है जनक जननी को कहियत कौन नारि को दासी। कैसो बरन वेश हैं, कैसो केहि रस के अभिलाषी ? पावैगो पुनि कियो आपनो ओरे कहैंगे गांसी। सुनत सुनत मौन है रह्यो ठग्यो सो 'सूर' सवै मतिं नाशी ॥" यह प्रश्न सुनते ही उद्धव जी मौन होकर ठगी सी रह गये। उनका सब मिथ्या ज्ञान नष्ट हो गया।

भ्रमर-गीतकार नन्ददास जी की गोपियां इसी प्रकार उद्धव से प्रश्न करती हैं– जो उनके गुण नाहिं और गुण भये कहाँ तें। बीज बिना तरु जमै मोहि तुमं कहो कहाँ ते ?' प्रह्लाद जी ने भगवान् से कहा है– "रूपे इमे सदसती तव वेदसृष्टे, बीजांकुराविव न चान्यदरूपकस्य। युक्ताः समक्षमुभयत्र विचिन्वते त्वा योगेन वहिमिवदारुषु नान्यतः स्यात् ॥ श्री मद्भा०। ब्रह्म ही जगत् का कारण (बीज) है। यदि कारण (ब्रह्म) में गुण नहीं हो तो कार्य (जगत्) में गुण कहाँ से आवेगा। क्योंकि कारण का गुण ही कार्य में अनुगत होता है। कारणाभावे कार्याभावः – वै० सू० कहा गया है। अतः गोपियों का उक्त तात्विक प्रश्न बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। जगत् में ब्रह्म के गुणो के प्रत्यक्ष दर्शन के अभाव का कारण तो प्रह्लाद जी ने ही बतला दिया है– 'जातेऽङ्कुरे कथमुहोपलभेत वीजम् ॥

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri/Sarayu Trust. Funding IKS-MoE-Grant-2

श्रीमद्भ० ॥ अतएव अनुमान एवं ध्यान (तं पश्यते निष्कलं ध्यायमानः – मु० ३।१।८ ॥' कश्चिद्धीरः प्रत्यगात्मानमैक्षद् आवृत्त चक्षुरमृतत्वमिच्छन् । का० ४।१। तद्विष्णोः परम् पदं सदा पश्यन्ति सूरयः । ऋ० १।२।५) द्वारा ही ब्रह्म के गुण एवं रूपों को देख सकते हैं । वेदों में ब्रह्म को बृहद् (महान्) युवा (श्रेष्ठ) कुमार (सुन्दर) शरीर वाला कहा है– 'बृहच्छरीरो विमिभाग ऋक्विभिर्युवाकुमारः प्रत्येत्याहवन् ॥ऋ १।१५५।६ ।' यह उनके रूप की विशेषता– 'क्षणे क्षणे यन्नवतामुपैति तदेव रूपं रमणीयतवायाः । माघ । का द्योतक है ।

परात्पर हम राम के अनन्त गुण हैं– 'राम अनन्त अनन्त गुण अमित कथा विस्तार ।' कहा है– असित गिरिसमं स्यात् कज्जलं सिन्धुपात्रे, सुरतरुवरशाखा लेखनी पत्रमुर्वीम् । लिखति यदि गृहीत्वा शारदा सर्व कालं, तदपि तव गुणानामीशपारं न याति ॥ अतः ब्रह्म सगुण है । निर्गुण का तात्पर्य लौकिक गुणों से एवं सगुण का तात्पर्य अलौकिक (दिव्य) गुणो से है ।

श्री बिन्दु जी ने कहा है– "होगा वह निराकार निर्गुण निर्लेप निरंजन भी होगा । हम को दिखलाई पड़ता है, सौवार हमारी आखों में ॥" अतः निर्गुण का अर्थ गुणाभाव नहीं है । प्रत्युत लौकिक गुण विक्षण "नित्यगुण" है । ब्रह्म नित्यगुण वाला (निर्गुण) और सत् गुण वाला (सगुण) है ।

सगुण और अगुण पद गुण का विरोधी नहीं है । गुण का संयोग सगुण और गुण का विभाग (पार्थक्य) अगुण पद है । अन्यत्र गुण और गुणी में पार्थक्य तथा आधाराधेय सम्बन्ध है, परन्तु ब्रह्म में इसके विपरीत तादात्म्य । दृष्टान्त के लिए ज्ञान गुण को लें । ज्ञानाधिकरणमात्मा के अनुसार ज्ञान गुण का आत्मा द्रव्य के साथ आधाराधेय भाव सम्बन्ध है । परन्तु 'समवायेन नित्यज्ञानवत्वम् परमात्मत्वम्' तथा 'समवायेन जन्यज्ञानत्वं जीवत्वम् भेद से जीव ज्ञान युक्त है और परमात्मा ज्ञानरूप है । अतः यहाँ जीवात्मा ज्ञानयुक्त (सगुण) दोनो स्थितियों में रहता है । परन्तु परमात्मा ज्ञानयुक्त सगुण या ज्ञानरहित अगुण नहीं है । या ज्ञान रहति (अगुण) अपितु ज्ञानरूप (गुण) ही है । अतः वह गुण रूप से ही अभिहित है – 'प्रज्ञानं ब्रह्म' इसी प्रकार रस को लें 'रसना ग्राह्यो गुणो रसः' रसना से जिसका ग्रहण किया जाए वह रस है और 'पृथिवी जल वृत्तिः' के अनुसार इसका अधिकरण पृथिवी और जल है । इस प्रकार यहाँ गुण और गुणी में आधाराधेय भाव है । परन्तु ब्रम रस युक्त या रस रहित नहीं अपितु रस रूप हैं – "रसो वै सः" अतः वह रस के प्रकरण में भी न तो रस युकत (सगुण) न रस रहित (अगुण) है, प्रत्युत रस रूप (गुण) ही है । इस प्रकार ब्रह्म का गुण स्वतंत्र होने (द्रव्याश्रित नहीं होने गुण स्वरूप होने से सगुण अगुण से भिन्न विशुद्ध गुण है और ब्रह्म सगुण अगुण भिन्न विशुद्ध गुण है । जो निश्चित (नित्य) होने से निर्गुण कहा जाता है उसके गुण का लक्षण द्रव्याश्रितत्व समाप्त हो जाने से वह द्रव्य रूप (स्वाश्रित स्वतंत्र) है । अतः इसमें गुणत्वाभाव (द्रव्याश्रयित्वाभाव) के कारण इसे निर्गुण का गुण निषेधपरक अर्थ भी मान लिया जाता है ।

गुण को सभी नहीं जान सकते और न समझ सकते हैं– 'गुणीगुणं वेत्ति न वेत्ति निर्गुणः' । ब्रह्म का सबसे बड़ा गुण प्रेम कहा गया है और उसे इस प्रेम (गुण) रूप ही मानकर कहा गया है– 'प्रेम ही ईश्वर है ।' यहाँ भी प्रेम गुण न होकर द्रव्य रूप है अतः ईश्वर इस अर्थ में निर्गुण है । ब्रह्म का गुण त्रिगुणातीत (अप्राकृतिक) होने से वह निर्गुण है ।

★★★

RajGuru Math, Shivala, Varanasi Collection. Equipment: Heritage Foundation, Jalgaon.